ग्रेट टू बी इंडियन नहीं...अब ग्रेट टू बी इन इंडिया

आईआईटी इंदौर के तीसरे कॉन्वोकेशन में सीएसआईआर के पूर्व डीजी माशेलकर ने स्टूडेंट्स को किया संबोधित

आईआईटी इंदौर की तीसरी कॉन्वोकेशन सेरमनी सोमवार को आयोजित की गई। बी. टेक के 77 स्टूडेंट्स सहित मास्टर्स और पी.एचडी स्टूडेंट्स भी शामिल हुए। डिग्री और मेडल्स देने के बाद जैसे ही एकेडमिक प्रोसेशन हॉल से बाहर हुआ, स्टूडेंट्स ने कुछ इस अंदाज में अपनी खुशी जाहिर की।

CONVOCATION CEREMONY

सिटी रिपोर्टर • इंडिया इज लेंड ऑफ आइडियाज एंड यूएसए इज ऑफ अपॉर्च्यूनिटीज ...भारत और अमेरिका के बारे में ये कहावत अब पुरानी हो चुकी है। विदेशों में काम कर रहे करीब 30 हजार भारतीय वैज्ञानिक पिछले साल वापस भारत लौटे हैं। ये केवल महज एक घटना नहीं बल्कि परिवर्तन की शुरुआत है। देश का भविष्य होने के नाते आज मैं आप सब स्टूडेंट्स से कहता हूं कि अब इट्स ग्रेट टू बी इंडियन नहीं बल्कि इट्स ग्रेट टू बी इन इंडिया।

काउंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च के पूर्व डायरेक्टर जनरल प्रोफेसर रघुनाथ अनंत माशेलकर ने ये बातें कॉन्वोकेशन के अवसर पर पासिंग आउट स्टूडेंट्स से कही। बतौर मुख्य अतिथि उन्होंने स्टूडेंट्स को सक्सेस के गोल्डल रूल भी बताए।

थर्ड वर्ल्ड कंट्री से थर्ड कंट्री

आप लोग बड़े भाग्यशाली हैं जो इस समय पासआउट हो रहे हैं। जब मैं ग्रेजुएट हुआ था उस वक्त भारत को थर्ड वर्ल्ड कंट्री समझा जाता था और आज जब आप ग्रेजुएट हो रहे हैं तो भारत को दुनिया में थर्ड पॉवरफुल कंट्री के रूप में देखा जा रहा है। ग्रेजुएट होने के बाद अब आपके कंधों पर यह जिम्मेदारी आ गई है कि दुनियाभर के लोगों की इस उम्मीद को पूरा करें।

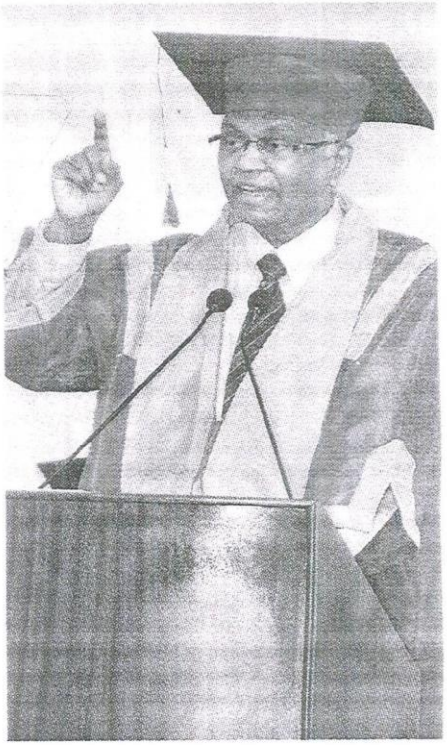

स्टूडेंट्स को मिले अवॉर्ड्स

आईआईटी के सिमरोल कैंपस में आयोजित कॉन्वोकेशन सेरेमनी में डायरेक्टर प्रदीप माथुर और चेयर, बोर्ड ऑफ गवर्नर अजय पिरामल भी मौजूद थे। चीफ गेस्ट ने मेरिटोरियस स्टूडेंट्स को गोल्ड और सिल्वर मेडल प्रदान किए। रोन्शी चावला को बेस्ट एकेडमिक परफॉर्मेंस के लिए प्रेसीडेंट ऑफ इंडिया गोल्ड मेडल, कम्प्यूटर साइंस के प्रखर शर्मा, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग के दीपक आर. और मैकेनिकल इंजीनियरिंग के प्रतीक चंद्रशेखर जुइकर को सिल्वर मेडल दिया गया।

भारत में पढ़ाना पसंद करूंगा

गोल्ड मेडलिस्ट रोन्शी चावला ने कहा- फिलहाल, मैं डीआरडीओ पूणे में जॉब कर रहा हूं। मास्टर्स डिग्री के लिए विदेश जाऊंगा लेकिन ये मेरा फाइनल गोल नहीं हैं। मेरे फादर प्रोफेसर हैं। दस साल बाद मैं अपने आप को आईआईटी या एनआईटी जैसे किसी इंस्टिट्यूट की फैकल्टी के रूप में देखना चाहूंगा।

प्रो. रघुनाथ अनंत माशेलकर ने बताए ये गोल्डन रूल

- आपकी एस्पिरेशन्स ही आपकी पॉसिबिलिटीज हैं
- मानवीय प्रयासों की कोई सीमा नहीं होती
- हार्ड वर्क का कोई सबस्टिट्यूट नहीं
- इंस्टेंट कॉफी की तरह कोई इंस्टेंट सक्सेस नहीं होती
- अपने प्रोफेशन का नापसंद ना करें
- अवसर के आने का रास्ता ना देखें, उन तक खुद पहुंचें
- हमेशा रचनात्मक बने रहें
- नहीं होगा, ऐसा कोई कहे तो ये उसके सीमा है, आपकी नहीं
- हर आदमी को इनोवेशन करना चाहिए
- मेहनत शांति से करें ताकि सफलता शोर मचाए
- सफलता चाहिए तो समय ना देखें, 24 घंटे मेहनत करें
- अच्छे काम का पेटेंट जरूरी कराएं

Dainik Bhaskar (Indore), 25th August 2015, City Bhaskar, Page-17